

## इंटरकनेक्टेड डज़िास्टर रसिक रपिर्ट, 2023

### प्रलिमिंस के लयि:

संयुक्त राष्टर इंटरकनेक्टेड डज़िास्टर रसिक रपिर्ट, 2023, [जलवायु परविरतन](#), [अंतरकिष मलबा](#), [वेट-बलब तापमान](#), [बाढ](#), [नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत](#), [आपदा जोखमि न्यूनीकरण के लयि सेंदाई फरेमवरक 2015- 2030](#), जलवायु जोखमि और प्रारंभकि चेतावनी प्रणाली, [आपदा रोधी बुनयािदी ढाँचे के लयि गठबंधन सोसायटी](#), राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना

### मेन्स के लयि:

इंटरकनेक्टेड डज़िास्टर रसिक रपिर्ट, 2023 के प्रमुख नषिकरष, बढ़ते आपदा जोखमिों के प्रमुख कारक

[स्रोत: हदुस्तान टाइम्स](#)

### चर्चा में क्यो?

हाल ही में जारी इंटरकनेक्टेड डज़िास्टर रसिक रपिर्ट, 2023 ने दुनया की परस्पर नरिभरता को सुखयिों में ला दिया है, इस रपिर्ट ने आसन्नवैश्वकि टपिगि पॉइंट्स की चेतावनी दी है और संभावति वनिाशकारी परणामों को रोकने के लयि तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता को रेखांकति कया है।

### रपिर्ट के प्रमुख नषिकरष:

- **परचिय:** संयुक्त राष्टर इंटरकनेक्टेड डज़िास्टर रसिक रपिर्ट संयुक्त राष्टर विश्वविद्यालय- पर्यावरण और मानव सुरक्षा संस्थान (UNU-EHS) द्वारा जारी एक वजिज्ञान-आधारति वार्षकि रपिर्ट है, इसका प्रथम प्रकाशन वर्ष 2021 में कया गया था।
  - प्रत्येक वर्ष रपिर्ट आपदाओं के कई वास्तवकि उदाहरणों का वशिलेषण करती है और बताती है कयिे एक-दूसरे से तथा मानवीय कार्यों से कैसे जुड़े हुए हैं।
  - यह रपिर्ट दर्शाती है कयिे सथरि प्रतीत होने वाली परणालयिों एक महत्त्वपूर्ण सीमा पार होने तक धीरे-धीरे नषिकरयि हो सकती है, जसिके परणामस्वरूप वनिाशकारी प्रभाव पड़ सकते हैं।
    - यह रपिर्ट "रसिक टपिगि पॉइंट्स" की अवधारणा प्रस्तुत करती है जो सामाजकि पारसिथितिकि तंत्र द्वारा जोखमिों को रोकने की अक्षमता तथा वनिाशकारी प्रभावों के बढ़ते जोखमि को दर्शाते हैं।

**नोट:** संयुक्त राष्टर विश्वविद्यालय (United Nations University- UNU) संयुक्त राष्टर की शैक्षणिक शाखा है जो एक ग्लोबल थकि टैंक के रूप में कार्य करता है। पर्यावरण और मानव सुरक्षा संस्थान (UNU-EHS) का उद्देश्य पर्यावरणीय खतरों एवं वैश्वकि परविरतन से संबंधति जोखमिों व अनुकूलन पर अत्याधुनकि शोध करना है। यह संस्थान जर्मनी के बॉन में सथति है।

- **टपिगि पॉइंट:** यह रपिर्ट इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कडुनया छह पर्यावरणीय टपिगि पॉइंट्स के करीब पहुँच रही है-
  - **भू-जल की कमी:** जलभूतों में संगृहीत भू-जल 2 अरब से अधिक लोगों के लयि महत्त्वपूर्ण है, जसिमें से 70% कृषिके लयि उपयोग कया जाता है।
    - हालाँकि विश्व के 21 प्रमुख जलभूत उनकी पुनर्रभरण की तुलना में तेज़ी से समाप्त हो रहे हैं।
    - जलभूत जल को एकत्रति होने में अमूमन हजारों वर्ष लग जाते हैं तथा यह अनविरय रूप से गैर-नवीकरणीय होता है।
    - **सऊदी अरब** जैसे कुछ कषेत्रों में अति-नषिकरषण हुआ है, जसिसे इसका 80% से अधिक **जलभूत** समाप्त हो गया है। जलभूत की कमी के कारण आयातति फसलों/कृषि उत्पादों पर नरिभरता बढ़ जाती है, जसिसे खादय सुरक्षा के लयि चुनौतयिों उत्पन्न होती हैं।
    - **भारत के गंगा के मैदानी भाग के कुछ कषेत्र पहले ही भू-जल की कमी की गंभीर सीमा को पार कर चुके हैं** तथा पूरे उत्तर-पश्चिमी कषेत्र द्वारा वर्ष 2025 तक गंभीर रूप से सीमति भू-जल उपलब्धता का सामना करने की संभावना है।
  - **प्रजातयिों के वलिपुत होने की प्रकरयि में तेज़ी आना:** **भूमि उपयोग में परविरतन**, अत्यधिक दोहन तथा **जलवायु परविरतन** जैसी मानवीय गतिविधयिों के परणामस्वरूप प्रजातयिों का वलिपुतीकरण तेज़ हो गया है।
    - मानव प्रभाव के कारण वर्तमान वलिपुतदिर सामान्य वलिपुतदिर से कई गुना अधिक है।

- वल्लिपूतीकरण से एक शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू हो सकती है, जिससे पारस्थितिक तंत्र का पतन हो सकता है।
- **परवर्तीय हमिनदों का तेज़ी से पघिलना:** हमिनद जल के प्रमुख स्रोत हैं, लेकिन **ग्लोबल वार्मिंग** के कारण वे दोगुनी दर से पघिल रहे हैं।
  - वर्ष 2000 से 2019 के बीच ग्लेशियरों से प्रतविर्ष 267 गीगाटन बर्फ पघिली। सीमति तापमान वृद्धि के बावजूद, वर्ष 2100 तक वशिव के लगभग 50% ग्लेशियरों के पघिलने का अनुमान है।
  - **हिमालय, काराकोरम और हिंदू कुश पहाड़ों के 90,000 से अधिक ग्लेशियर** खतरे में हैं तथा उन पर निर्भर लगभग 870 मिलियन लोगों का जीवन भी खतरे में है।
- **बढ़ता अंतरिक्ष मलबा:** उपग्रह मौसम नगिरानी, संचार और सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन अंतरिक्ष में कृत्रिम उपग्रहों की बढ़ती संख्या अंतरिक्ष मलबे की समस्या उत्पन्न कर रही है।
  - केवल 25% ऑर्बिट में सक्रिय उपग्रह मौजूद हैं; शेष गैर-कार्यात्मक मलबा है।
    - अंतरिक्ष में लगभग 130 मिलियन सूक्ष्म, ट्रैक न किये जा सकने वाले मलबे के टुकड़े हैं।
  - अंतरिक्ष मलबे के ये टुकड़े तेज़ी से वचिरण करते हैं और संचालनरत उपग्रहों के साथ टकराव का खतरा उत्पन्न करती हैं, जिससे एक खतरनाक कक्षीय पर्यावरण तैयार होता है।
- **असहनीय गर्मी:** वर्तमान में जलवायु परिवर्तन अत्यधिक घातक हीटवेव का कारण बन रहा है। उच्च तापमान और आर्द्रता शरीर को ठंडा रखने में कठिनाई उत्पन्न करती है।
  - जब "वेट-बलब तापमान" 35°C से अधिक हो जाता है और छह घंटे से अधिक समय तक रहता है, तो यह 'वेट-बलब' तापमान अंग वफिलता एवं मसृत्तक क्षतिका कारण बन सकता है। ऐसी घटना पाकिस्तान के जैकबाबाद जैसी जगहों पर हो चुकी है।
    - साथ ही वर्ष 2023 में भारत में एक हीटवेव के दौरान वेट-बलब तापमान 34°C से अधिक हो गया।
  - अनुमान है कि वर्ष 2100 तक वैश्विक आबादी का 70% से अधिक हिस्सा इससे प्रभावित होगा।
- **बीमा न करने सकने योग्य (UNINSURABLE) भविय:** प्राय गंभीर प्रतिकूल मौसम के कारण वर्ष 1970 के दशक के बाद से ही हानि में सात गुना वृद्धि हो रही है, वर्ष 2022 में 313 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक की हानि होने की संभावना है।
  - जलवायु परिवर्तन के कारण बीमा लागत बढ़ रही है, जिससे इसकी पहुँच कई लोगों के लिये वहनीय नहीं रह गई है।
  - कुछ बीमाकर्ता अधिक जोखिम वाले क्षेत्रों को बीमा योग्यता श्रेणी से बाहर कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रों को बीमा के लिये अयोग्य घोषित किया जा रहा है।
    - उदाहरण के लिये, ऑस्ट्रेलिया में बाढ़ के बढ़ते जोखिम के कारण वर्ष 2030 तक लगभग 520,940 परिवार बीमा योग्यता श्रेणी से बाहर हो गए हैं।
- **अंतरसंबंध: बढ़े हुए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से प्रेरित जलवायु परिवर्तन टपिगि बढिओं के एक सामान्य चालक के रूप में कार्य करता है। इसमें ग्लेशियर पघिलना, चरम मौसम की घटनाएँ और बीमा जोखिम परदृश्य में बदलाव शामिल हैं।**
  - ये परस्पर जुड़े पर्यावरणीय मुद्दे फीडबैक लूप को ट्रिगर कर सकते हैं, जैसे ग्लेशियर के पघिलने से समुद्र का स्तर बढ़ना, तटीय बाढ़ में वृद्धि और आपदा बीमा की मांग में वृद्धि।
  - अंततः इन टपिगि बढिओं के महत्त्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक परिणाम होते हैं।

## बढ़ते आपदा जोखिमों के प्रमुख चालक:

- **शहरीकरण:** तीव्र शहरीकरण प्राय पर्याप्त योजना और बुनियादी ढाँचे के विकास के बिना होता है।
  - जैसे-जैसे शहर वसितृत हैं वैसे-वैसे अधिक से अधिक व्यक्तवि संपत्ति **बाढ़ और भूकंप** जैसे खतरों के संपर्क में आते हैं, जिससे आपदा की संवेदनशीलता बढ़ती है।
- **पर्यावरणीय क्षरण:** **वनों की कटाई**, मृदा अपरदन और **पर्यावरण प्रदूषण** प्राकृतिक पारस्थितिकी तंत्र को कमजोर करते हैं और आपदाओं के खलिफ प्रतरोधक के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता को कम करते हैं। पर्यावरणीय क्षरण खतरों के प्रभाव को बढ़ाता है।
- **अपर्याप्त और अकुशल बुनियादी ढाँचा:** अपर्याप्त रूप से निर्मित या रखरखाव किये गए बुनियादी ढाँचे, जैसे पुल, भवन और सड़कें, आपदाओं के दौरान ढह सकते हैं, जिससे महत्त्वपूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक हानि हो सकती है।
- **अनुपजाऊ भूमि उपयोग योजना:** अपर्याप्त भूमि उपयोग योजना के परिणामस्वरूप, **समुदाय बाढ़ के मैदानों या वनागन-प्रवण क्षेत्रों जैसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में बस सकते हैं। यह आपदाओं के जोखिम को बढ़ाने में योगदान देता है।**
- **जल प्रबंधन के मुद्दे:** जल संसाधनों के कृप्रबंधन से सूखा, जल की कमी और बाढ़ आ सकती है।
  - इन मुद्दों के खाद्य सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और समुदायों पर दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।
- **वैश्विक अंतरसंबंध:** जैसे-जैसे वशिव अधिक अंतरसंबंधित होता जा रहा है, **किसी एक क्षेत्र में व्यवधान का वैश्विक स्तर पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।**
  - यह अंतरसंबंध आपदाओं के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव को बढ़ा सकता है।

## समाधान के लिये रपिोर्ट की अनुशंसाएँ:

- **यह रपिोर्ट आपदा जोखिमों से निपटने के लिये समाधानों को वर्गीकृत करने और प्राथमकता देने हेतु चार-श्रेणी के ढाँचे का प्रयोग करती है।**
  - **वलिंब से बचें:** ये ऐसी कार्रवाइयाँ हैं जिनका उद्देश्य वर्तमान तरीकों के उपयोग से आपदाओं को कम करके उन्हें नयित्तरति करना है।
    - उदाहरण के लिये, आपदाओं से होने वाली बड़ी क्षतिका को रोकने हेतु तत्काल सख्त बलिडगि कोड और भूमि-उपयोग नयिमों को लागू करना आवश्यक है।
  - **परिवर्तन से बचाव:** इन प्रक्रियाओं का लक्ष्य मौजूदा प्रथाओं में बड़े बदलाव लागू करके आपदाओं को टालना अर्थात् उनपर नयित्त्रण रखना है।

- उदाहरण के लिये, जलवायु परिवर्तन से जुड़े जोखिमों से बचने हेतु जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा उत्पादन के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (जैसे सौर एवं पवन) की ओर रुख करना।
- **एडैप्ट-डेली (Adapt-Delay):** हमारे प्रतिक्रिया समय को बढ़ाकर, ये उपाय हमें आपात स्थितियों से निपटने में सक्षम बनाते हैं।
  - उदाहरण के लिये, सुनामी हेतु उन्नत प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली को विकसित करना ताकि लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने और आपदा की तैयारी के लिये पर्याप्त समय मिल सके।
- **एडैप्ट-ट्रांसफॉर्म (Adapt-Transform):** इन कार्यों में आपदाओं के अनुकूल कार्य करने के तरीके में बड़े बदलाव करना शामिल है।
  - उदाहरण के लिये, समुद्र के बढ़ते जल स्तर के अनुकूल होने और तटीय सुरक्षा रणनीतियों को बदलने के लिये तटीय ज़ोन रणनीतियों को लागू करना एवं प्राकृतिक बाधा पारस्थितिकी तंत्र (जैसे मैंग्रोव) को बहाल करना।

## आपदा जोखिम न्यूनीकरण हेतु पहल:

### ■ वैश्विक:

- [आपदा जोखिम न्यूनीकरण हेतु सेंडाई फ्रेमवर्क 2015-2030](#)
- [जलवायु जोखिम और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली \(CREWS\)](#)
- [आपदा जोखिम न्यूनीकरण हेतु अंतरराष्ट्रीय दस - 13 अक्टूबर](#)
- [जलवायु सूचना और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली पर ग्रीन क्लाइमेट फंड की क्षेत्रीय मार्गदर्शिका](#)

### ■ भारत की पहल:

- [आपदा रोधी अवसंरचना सोसायटी हेतु गठबंधन \(CDRIS\)](#)
- [राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना \(NDMP\)](#)

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????:**

प्रश्न. आपदा प्रबंधन में पूर्ववर्ती प्रतिक्रियात्मक उपागम से हटते हुए भारत सरकार द्वारा आरंभ किये गए अभिनूतन उपायों की वविचना कीजिये। (2020)

प्रश्न. आपदा प्रभावों और लोगों के लिये उसके खतरे को परिभाषित करने के लिये भेद्यता एक आवश्यक तत्त्व है। आपदाओं के प्रति भेद्यता का कसि प्रकार और कनि-कनि तरीकों के साथ चरतिर-चतिरण कया जा सकता है? आपदाओं के संदर्भ में भेद्यता के वभिन्न प्रकारों पर चर्चा कीजिये। (2019)

प्रश्न. भारत में आपदा जोखिम न्यूनीकरण (डी.आर.आर.) के लिये 'सेंदाई आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रारूप (2015-2030)' हस्ताक्षरति करने से पूर्व एवं उसके पश्चात् कयि गए वभिन्न उपायों का वर्णन कीजिये। यह प्रारूप 'हयोगो कार्रवाई प्रारूप, 2005' से कसि प्रकार भन्ति है? (2018)